International Journal Of Multidisciplinary Research In Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 4.988

| Volume 4, Issue 4, April 2021 |

शिक्षण प्रविधियों में परिवर्तित प्रतिमान

डॉ. बिहारी सिंह

एसोसिएट प्रोफेसर व विभागाध्यक्ष , शिक्षा संकाय , के. एन. आई. पी. एस. एस. सुल्तानपुर (उ. प्र.)

सार

शिक्षण प्रतिमानों का विकास अधिगम के सिद्धान्तों के आधार पर किया गया है। शिक्षण-सिद्धान्त के अन्तर्गत चरों के कार्यों,आपसी सम्बन्यों तथा अन्त प्रक्रिया को क्रमबद्ध रूप से व्याख्या की जाती है। जबकि प्रतिमान के चरों के लिये अधिगम के सिद्धान्तों के सादृश अनुभव (Analogy) से उनकी उपयोगिता के सम्बन्ध में निर्णय लिया जाता है। शिक्षण प्रतिमान आंग्ल भाषा के टीचिंग मॉडल (Teaching Model) का पर्यायवाची है किसी रूपरेखा अथवा उद्देश्य के अनुसार व्यवहार को ढालने की प्रक्रिया प्रतिमान कहलाती है। इस प्रकार प्रतिमान का अर्थ किसी अमुक उद्देश्य के अनुसार व्यवहार में परिवर्तन लाने की प्रक्रिया है। शिक्षण के प्रत्येक प्रतिमान में शिक्षण की विशिष्ट रूपरेखा का विवरण होता है जिसके सिद्धान्तों की प्रतिपुष्टि प्राप्त किये हुये निष्कर्षों पर आधारित होती है। इस प्रकार शिक्षण प्रतिमान शिक्षण सिद्धान्त के लिये उपकल्पना (Hypothesis) का कार्य करते हैं। इन्हीं उपकल्पनाओं की जाँच के पश्चात् सिद्धान्तों को प्रतिपादित किया जाता है। कक्षा में शिक्षक का यही प्रयास होता है कि वह ऐसा शिक्षण अधिगम वातावरण तैयार करे जिससे छात्रों को अधिकतम अधिगम की सम्भावना एवं सुअवसर प्राप्त हो सकें तथा अपने व्यवहार में वांछनीय उद्देश्यों के अनुरूप परिवर्तन भी कर सकें। इसी उद्देश्य की प्राप्ति हेतु अध्यापक कक्षा एवं कक्षीय परिस्थितियों में विभिन्न प्रकार की शिक्षण व्यूह रचना करता है। इस शिक्षण व्यूह रच`1qwerना (Teaching Strategy) का तात्पर्य ही यह है कि कक्षीय परिस्थितियों में एक शिक्षण प्रतिमान या शिक्षण मॉडल की उचित रूप में व्यवस्था की जाय। इससे सबसे बड़ा लाभ शिक्षक को अपनी शैक्षिक क्रियाओं एवं पाठ्यवस्तु के सम्प्रेषण के लिए मापदण्डों के निर्धारण में सहायता प्राप्त होती है। एक समय ऐसा था कि मनोवैज्ञानिक कक्षीय क्रियाओं का केन्द्र बिन्दु (Pivot) अधिगम (Learning) और उसे अधिकाधिक बढ़ाने के साधनों को जुटाने में विश्वास करते थे, किन्तु आज के समय में ऐसा नहीं है। अब कक्षीय क्रियाओं का केन्द्र अधिगम को न मानकर शिक्षण (Teaching) को माना जाने लगा है। इसका प्रमुख कारण यह रहा है कि मनोविज्ञान के अधिगम के नियम एवं सिद्धान्त कक्षीय शिक्षण की। समस्याओं तथा शैक्षिक वातावरण की समस्याओं के उचित हल प्रस्तुत करने में पूर्ण असमर्थ रहे हैं। इसीलिए आज के समय में इस प्राथमिकता को बदल दिया गया है और अब कुशल शिक्षण को कक्षीय एवं शैक्षिक परिस्थितियों के समन्वयीकरण हेतु शिक्षक शिक्षण को केन्द्र बिन्दु में रखा गया है। जिस ढंग से शिक्षक शिक्षार्थी को ज्ञान प्रदान करता है उसे शिक्षण विधि (teaching method) कहते हैं। "शिक्षण विधि" पद का प्रयोग बड़े व्यापक अर्थ में होता है। एक ओर तो इसके अंतर्गत अनेक प्रणालियाँ एवं योजनाएँ सम्मिलित की जाती हैं, दूसरी ओर शिक्षण की बहुत सी प्रक्रियाएँ भी सम्मिलित कर ली जाती हैं। कभी-कभी लोग युक्तियों को भी विधि मान लेते हैं; परंतु ऐसा करना भूल है। युक्तियाँ किसी विधि का अंग हो सकती हैं, संपूर्ण विधि नहीं। एक ही युक्ति अनेक विधियों में प्रयुक्त हो सकती है।

परिचय

शिक्षण प्रतिमान परिवार को मुख्य चार परिवारों में वर्गीकृत किया गया है –

1. सामाजिक परिवार
2. सूचना प्रक्रिया परिवार
3. व्यक्तिगत परिवार
4. व्यावहारिक व्यवस्था परिवार

उपरोक्त परिवारों के आधार पर ही जायज एवं वील ने शिक्षण प्रतिमान ओं को वर्गीकृत किया है, जिन्हें आधुनिक शिक्षण प्रतिमान कहा जाता है इनका विवरण निम्न है-

सामाजिक अंत:क्रिया शिक्षण प्रतिमान में मनुष्य के सामाजिक पक्ष के दृष्टिगत सामाजिक विकास पर विशेष ध्यान दिया जाता है। मानव अपने सामाजिक संबंधों पर अधिक बल देता है। इसीलिए इसका अध्ययन उस शिक्षण प्रतिमान में किया जाता है। जिसमें संबंधित प्रजातांत्रिक व्यवहार को उत्पन्न करने सामाजिक जीवन दोनों में वृद्धि करने में नागरिकों को तैयार किया जा सके।[1]

सूचना प्रक्रिया शिक्षण प्रतिमान में मानव प्राणियों के जन्मजात से संबंधित व्रतियों पर बल दिया जाता है। इसमें इसके आंकड़ों को प्राप्त करने कथा व्यवस्थित करने समस्याओं की भावना समझने और समाधान खोजने का प्रयास किया जाता है। इसलिए प्रतिमान सृजनात्मक चिंतन उत्पन्न करते हैं। इस शिक्षण प्रतिमान के निम्नलिखित 6 प्रकार हैं।

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 4.988

| Volume 4, Issue 4, April 2021 |

1. वैज्ञानिक पूछताछ प्रशिक्षण प्रतिमान
2. संप्रत्यय उपलब्धि शिक्षण प्रतिमान
3. अग्रिम संगठन शिक्षण प्रतिमान
4. आगमन शिक्षण प्रतिमान
5. जैविक विज्ञान पूछताछ शिक्षण प्रतिमान
6. विकासात्मक शिक्षण प्रतिमान

व्यक्तिगत शिक्षण प्रतिमान में व्यक्तिगत विकास को विशेष महत्व दिया जाता है जिससे वह स्वयं के विषय में समझ सकें अपनी शिक्षा के उत्तरदायित्व ले सकें और अपने विकास से आगे बढ़ने के लिए सीख सकें और उच्च स्तरीय जीवन यापन के लिए अपनी खोज में अधिक संवेदनशील और अधिक रचनात्मक हो सके।व्यवहार परिवर्तन शिक्षण प्रतिमान किसी के व्यवहार में परिवर्तन करने पर बल देते हैं जिसमें व्यवहारों कार्यों एवं विधियों का विशेष रूप से ध्यान केंद्रित किया जाता है।[2]

अवलोकन

शोध निषकर्ष कितने सार्थक एवं उपयोगी हैं। इसका अनुमान उसके व्यवहारिक रूप से लगाया जाता है।

१- आन्तरिक वैधता- से तातपर्य उन निष्कर्षो से होता है जिनमें आकडे नियन्त्रित परिस्थिति में प्राप्त किये जाते हैं। प्रयोगात्मक शोधों की आन्तरिक वैधता अधिक होती है। परिस्थितियां जितनी अधिक नियन्त्रित होती हैं आन्तरिक वैधता उतनी अधिक होती है।

२- बाह्य वैधता- इसका संबंध उन शोध निष्कर्षों से है जिनमें न्यादर्श जनसंख्या का शुद्ध रूप में प्रतिनिधित्व करता है। सर्वेक्षण विधि से प्राप्त निष्कर्षो की बाह्य वैधता अधिक होती है। तथा अन्तरिक वैधता अधिक होती है।

प्रजाति वृत्तिक अनुसंधान

यह सांकेतिक अन्त: क्रिया और सूक्ष्म मानव व्यवहार का अध्ययन है।
इसमें सामान्यीकरण को महत्व नही दिया जाता । प्रजातिवृत्त मानवशास्त्र की शाखा है। इसमें विभिन्न समय में प्रजातियों का इतिहास एवं उसके आर्विभाव का अध्ययन किया जाता है।

प्रजातिवृत्त अनुसंधान में व्यक्तियों के व्यवहारों का अध्ययन किया जाता है। एवं व्यकति कैसे अपनी क्रियाओं का प्रत्यक्षीकरण करता है। समुदाय विशेष के लोग कैसा व्यवहार करते हैं एवं क्या सोचते हैं।[3]

इसे स्वाभाविक अनुसंधान या सर्वेक्षण अनुसंधान भी कहते हैं। प्रदत्त संकलन करने के लिए सहभागी विधि का प्रयोग किया जाता है।

विशेषताएं

१- यह गुणात्मक एवं वर्णनात्मक अनुसंधान है।
२- इसमें निष्कर्षों की बाह्य वैधता अधिक होती है।
३- सम्पूर्ण परिस्थिति को ध्यान में रखकर अध्ययन किया जाता है।
४- इसका संबंध वर्तमान व अतीत से है।
५- इसमें मानव व्यवहार का अध्ययन स्वभाविक परिस्थिति में किया जाता है।

प्रजावृत्तिक अनुसंधान के चरण

१- उददेश्यों का निर्माण
२- शोध प्रारूप का नियोजन
३- प्रदत्त संकलन
४- प्रदत्त विश्लेषण्
५- निष्कर्ष

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 4.988

| Volume 4, Issue 4, April 2021 |

विचार – विमर्श

स्मृति स्तर (Memory Level) – स्मृति स्तर वह आधार है जिसमे छात्रों के मानसिक स्तर के एक स्मृति पक्ष को आधार बनाकर शिक्षा प्रदान की जाती हैं। यह बाल्यावस्था एव शिशुअवस्था में प्रदान करवाई जाती है क्योंकि इसमें बालक का बौद्धिक विकास अपने शुरुआती दौर में होता हैं।इन सभी की आवश्यकताओं को स्वीकार करते हुए शिक्षण को 3 स्तरों में विभक्त किया गया हैं- [4]

1. स्मृति स्तर (Memory Level)
2. बोध स्तर (Understanding Level)
3. चिंतन स्तर (Reflective Level)

1. स्मृति स्तर (Memory Level) – स्मृति स्तर वह आधार है जिसमे छात्रों के मानसिक स्तर के एक स्मृति पक्ष को आधार बनाकर शिक्षा प्रदान की जाती हैं। यह बाल्यावस्था एव शिशुअवस्था में प्रदान करवाई जाती है क्योंकि इसमें बालक का बौद्धिक विकास अपने शुरुआती दौर में होता हैं।बालक किसी भी चीज को समझने हेतु उसका एक चित्र या चिन्ह के रूप में अपने मस्तिष्क में धारण कर लेते हैं। उदाहरणतः जब उन्हें कोई कहानी सुनाई जाती है तो वह बिना उस कहानी के पात्रों की आकृति अपने मस्तिष्क में धारण कर लेटर है इसे ही सामान्यतः शिक्षण का स्मृति स्तर कहा जाता हैं।

स्मृति स्तर की अवस्थाएं Memory level states

1. अधिगम (Learning) – स्मृति के स्थरीकरण हेतु अधिगम का बेहद अहम योगदान होता है, क्योंकि किसी व्यक्ति की स्मृति को तभी स्थायित्व प्राप्त होता है जब उसे उस प्रकरण से संबंधित याद हो तभी बालक अपनी स्मृति को संचित करके रख सकता हैं।

2. धारण (Retention) – किसी प्रकरण से संबंधित पहलुओं को अपने मस्तिष्क में संजोय रखने को धारण करना कहते हैं, अर्थात बालक जितने अधिक समय तक किसी बात को अपने मस्तिष्क में धारण करके रखता है वह उसकी धारण शक्ति को प्रदर्शित करता हैं।

3. प्रत्यास्मरण (Recall) – धारण की हुई वस्तु को आवश्यकतानुसार पुनः स्मरण करना अर्थात सीखी हुई वस्तु को भविष्य में अपने काम मे लाने की क्षमता को ही प्रत्यास्मरण कहते हैं।[5]

4. पहचान (Recognition) – किसी रास्ते मे पुनः जाने पर यह पहचान लेना कि हम यहाँ पहले भी आए थे। अतः स्मृति का पुनःस्मरण करना ही पहचान हैं।

स्मृति का वर्गीकरण Classification of Memory

1. तत्कालीन स्मृति (Immediate Memory) – तत्कालीन स्मृति स्मृति का वह प्रकार है, जो निश्चित समय तक ही स्थायी रहता है। उदाहरण के लिए जब हम किसी प्रकरण की रटते है तो वह हमारी तत्कालीन स्मृति के अंतर्गत आती हैं।

2. स्थायी स्मृति (Permanent Memory) – स्थायी स्मृति में याद करने की क्षमता अधिक होती है, इसमें व्यक्ति सीखी हुई वस्तु का आसानी से प्रत्यास्मरण कर लेता हैं।

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 4.988

| Volume 4, Issue 4, April 2021 |

अच्छी स्मृति की विशेषता Characteristics of Good Memory

1. शीघ्र अधिगम – अच्छी स्मृति वह होती है, जिसको सुनते ही हमारे मस्तिष्क में उसकी आकृतियों या चिन्ह स्थापित हो जाते है, ऐसी स्मृति स्थायी होती हैं।[6]

2. स्थायित्व – वह स्मृति सर्वश्रेष्ठ मानी जाती है, जिनको हम अधिक समय तक धारण कर सकते हैं।

3. पुनः स्मरण – अच्छी स्मृति वह है जिसे आवश्यकता पड़ने पर आसानी से पुनःस्मरण किया जा सकें।

2. बोध स्तर (Understanding Level) – बोध स्तर का शिक्षण शिक्षण के स्तर Levels of Teaching का मध्य स्तर हैं, इसमें उन छात्रों को सम्मिलित किया जाता है। जिनकी बुद्धि विकासशील होती है और जिनका स्मृति स्तर के उद्देश्यों की प्राप्ति हो जाती है, तत्पश्चात शिक्षण को बोध स्तर की ओर ले जाया जाता हैं।जिसमें छात्रों को रट कर याद करने के बजाय उन्हें प्रकरण के समस्त पहलुओं को बारीकी से समझाया जाता है। जिससे उनका मस्तिष्क उस प्रकरण के पहलुओं को समझ कर उनके मध्य के अंतरों को समझ सकें। इसमें शिक्षक शिक्षण के दौरान प्रस्तुतिकरण पर अधिक बल देता हैं।जिससे छात्र उस प्रकरण के उद्देश्यों का बोध कर सकते है एवं उसे प्रकरण की घटनाओं एवं विचारों के पीछे के उद्देश्यों एवं लक्ष्यों को जान सकें। बोध स्तर का शिक्षण का उपयोग सामान्यतः माध्यमिक स्तर के छात्रों हेतु अधिक किया जाता हैं।[7]

3. चिंतन स्तर (Reflective Level) – यह शिक्षण के स्तर (Levels of Teaching) का आखिरी हिस्सा है। इसमें मुख्यतः उन छात्रों को सम्मिलित किया जाता है। जिनका स्मृति स्तर और बौद्धिक स्तर दोनों का विकास हो चुका हो। चिंतन स्तर का शिक्षण छात्रों को चिंतन करने में उनकी सहायता करता है।यह छात्रों को वह क्षमता प्रदान करता है, जिससे छात्र प्रकरण के नकारात्मक एवं सकारात्मक (Negative and Positive) दोनों पहलुओं को समझ कर यह निर्णय ले सकें कि इस प्रकरण में अगर कुछ नए पात्रों और नए विचारों को सम्मिलित किया जाता है, तो प्रकरण के उद्देश्यों को किस तरह परिवर्तित किया जा सकता हैं।

चिंतन स्तर के शिक्षण की विशेषताए Features of Reflective level teaching

1. चिंतन स्तर (Reflective Level) का शिक्षण छात्रों में समस्या-समाधान की प्रवृति का विकास करता हैं। जिससे वह भविष्य में आने वाली समस्याओं का समाधान निकालने हेतु तैयार हो सकें।

2. यह विद्यार्थियों के आलोचनात्मक पक्ष का विकास कार्य है, अर्थात यह छात्रों को यह समझने में उनकी सहायता करता है कि क्या सही है और क्या गलत।[8]

3. यह छात्रों की चिंतन शक्ति का विकास कर उनमें सर्जनात्मकता के तत्वों का विकास करता हैं।

आधुनिक शिक्षा की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए यह आवश्यक है कि शिक्षा की गुणवत्ता में जितनी हो सकें उतनी वृद्धि की जाए। जिससे गुणवान एवं बुद्धिमान नागरिकों का निर्माण हो और जिससे वह आपजी भावी जीवन मे अपने राष्ट्र के विकास में अपना सहयोग प्रदान कर सकें।[9]

परिणाम

शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षक, स्वतंत्र चर के रूप में कार्य करता है | वह छात्रों को अधिगम-अनुभव प्रदान करने के लिए विभिन्न प्रकार के कार्य करता है | Shikshan प्रक्रिया में छात्र को आश्रित चर की संज्ञा दी जाती है क्योंकी शिक्षण प्रक्रिया में नियोजन, व्यवस्था व प्रस्तुतीकरण के अनुसार ही उसे सक्रिय रूप से कार्य करना पड़ता है | शिक्षण प्रक्रिया में पाठ्य-वस्तु, शिक्षण विधियाँ, शिक्षण

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 4.988

| Volume 4, Issue 4, April 2021 |

युक्तियाँ तथा शिक्षण व्यूह रचनाएं आदि हस्तक्षेप चर वर्ग में आती हैं | ये सभी चर शिक्षण प्रक्रिया में हस्तक्षेप करते हैं | शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षण तथा छात्र (स्वतंत्र तथा आश्रित चर) हस्तक्षेप चरों के माध्यम से निम्नांकित कार्य करतें हैं-

1. निदानात्मक क्रियाएं या कार्य |
2. उपचारात्मक क्रियाएं या कार्य |
3. मूल्यांकन संबंधी क्रियाएं या कार्य |[10]

निदानात्मक कार्यों में शिक्षक (सवतंत्र चर) अधिक क्रियाशील रहता है | वह पाठ्य-वस्तु और छात्र दोनों पर ही विशेष ध्यान देता है | शिक्षक इस बात का निदान करता है कि छात्रों को क्या-क्या आता है और क्या-क्या आना चाहिए | इस प्रकार शिक्षक का प्रमुख उद्देश्य छात्रों को नया ज्ञान प्रदान करना होता है | नया ज्ञान प्रदान करने के लिए शिक्षक तीन प्रकार के कार्य करता है –

1. इस बात का निदान करता है की छात्रों को क्या-क्या आता है और उनको कहाँ-कहाँ पर कठिनाई होती है | नैदानिक परीक्षाएं इसमें सहायक सिद्ध होतीं हैं |
2. पाठ्य वास्तु का विश्लेषण करके शिक्षक उसे इस प्रकार से पुनर्व्यवस्थित करता है की वह छात्रों के लिए बोधगम्य हों जाए |
3. छात्रों के निदान किये पूर्वज्ञान के आधार पर पाठ्य-वस्तु को छात्रों के समक्ष प्रस्तुत कर उन्हें नया ज्ञान प्रदान करता है |

"छात्र और शिक्षक के मध्य अन्तः क्रिया में दोनों ही चर एक-दूसरे का निदान करतें हैं तथा अनुक्रिया के विषय में फैसला करतें हैं |"निदान के माध्यम से जो लक्षण, स्तर अथवा कमियाँ शिक्षक को मालूम होतीं हैं, उन पर नियंत्रण रखने तथा उनका उपचार करने का कार्य भी शिक्षक है |अच्छे शिक्षक उपचार करने के लिए अनेक युक्तियों और विधियों का प्रयोग छात्रों की प्रकृति, पूर्वज्ञान आदि को ध्यान में रखतें हुए करतें हैं |उपचारात्मक कार्यों के द्वारा शिक्षक अपने शिक्षण के उद्देश्य को प्राप्त करने का प्रयाश करता है तथा छात्रों में वांछित परिवर्तन लाता है | [10]

उपचारात्मक क्रियाओं के दो प्रमुख तत्व हैं-

1. शिक्षण कौशल का उपयोग करना |
2. पृष्ठपोषण की समुचित व्यवस्था करना |

उचारात्मक क्रियाओं में शिक्षक सक्रीय रूप से कार्य करता है | वह आवश्यकतानुसार छात्रों से भी कभी-कभी सहायता लेता है |"उपचारात्मक क्रियाओं में उद्देश्य प्राप्त करने के लिए अपनाए जाने वाले चरों में तालमेल बैठाकर उन्हें वांछित उपचार के लिए प्रयुक्त किया जाता है |"यह कार्य कक्षा के अन्दर किया जाता है |

मूल्यांकन, शिक्षण प्रक्रिया का अभिन्न अंग है | इसका उद्देश्य उपचारात्मक कार्यों की प्रभावशीलता के विषय में जनाना है |इसके माध्यम से यह जानने का प्रयास किया जाता है कि छात्रों में वांछित परिवर्तन हुआ है या नहीं |यदि हुआ है तो किस सीमा तक | मूल्यांकन, उद्देश्य पर निर्भर रहता है |यह शिक्षक को बताता है की उसके द्वारा निश्चित किये गए उद्देश्य कहाँ तक पूरे किये हुए हैं |मूल्यांकन के लिए शिक्षक विभिन प्रकार की प्रविधियों का प्रयोग करता है तथा परीक्षणों का निर्माण करता है |[11]

मूल्यांकन क्रियाओं के हस्तक्षेप चरों में निम्न चार अधिक महत्वपूर्ण हैं –

1. मानदंड की रचना के चर
2. व्यवहार परिवर्तन का अध्ययन
3. निदानात्मक चर

उपर्युक्त चरों के कार्यों को निम्न प्रकार से सार रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है – शिक्षण के चर

शिक्षण चरों के कार्य (Functions Teaching Variables)

निदानात्मक कार्य

1. शिक्षण की समस्या का विश्लेषण
2. छात्रों के पूर्व ज्ञान का निर्धारण

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 4.988

| Volume 4, Issue 4, April 2021 |

3. व्यक्तिगत विभिन्नताओं का ज्ञान
4. कार्य विश्लेषण (पाठ्यसामग्री विश्लेषण)[14]

उपचारात्मक कार्य

1. शिक्षण कौशल, नीति एवं युक्ति का चुनाव करना
2. पृष्ठपोषण की प्रविधियों की व्यवस्था करना
3. निदान के अनुसार उपचार करना[12]

मूल्यांकन कार्य

1. मानदंड परिक्षा की रचना करना
2. व्यवहार परिवर्तन का मूल्यांकन करना[15]

निष्कर्ष

नई शिक्षा नीति 2021

स्कूलों में एक्स्ट्रा करिकुलर, प्रोफेशनल स्ट्रीम, साक्षरता और अंकगणित को प्रमुख महत्व दिया जाएगा, शैक्षणिक धाराएँ समान रहेंगी। नई नीति के साथ, व्यावसायिक शिक्षा कक्षा 6 से प्रशिक्षण के साथ शुरू हो जाएगा वें । मातृभाषा में शिक्षण या जब तक कक्षा 5 क्षेत्रीय स्तर पर किए गए अनिवार्य वें । सीखने के परिणामों आदि को प्राप्त करने के लिए छात्र प्रगति पर नज़र रखने के लिए व्यापक 360-डिग्री प्रगति कार्ड की शुरुआत की गई।[13]

- मेडिकल और लॉ कॉलेजों को छोड़कर, सभी उच्च शिक्षा संस्थान एक ही नियामक द्वारा शासित होंगे।
- एमफिल की समाप्ति। पाठ्यक्रम।
- आवेदन और ज्ञान आधारित बोर्ड परीक्षा लागू।
- सार्वजनिक और निजी दोनों उच्च शिक्षा संस्थानों पर समान मानदंड लागू होंगे।
- मातृभाषा में शिक्षण या जब तक कक्षा 5 क्षेत्रीय स्तर पर किए गए अनिवार्य वें ।
- उच्च शिक्षा संस्थानों और विश्वविद्यालयों के लिए सामान्य प्रवेश परीक्षा।
- स्कूली पाठ्यक्रम में मुख्य अवधारणाओं पर अधिक ध्यान दिया जाना चाहिए।
- व्यावसायिक शिक्षा कक्षा 6 से प्रशिक्षण के साथ शुरू हो जाएगा वें ।
- 10+2 अध्ययन संस्कृति बंद हो जाती है और 5+3+3+4 की नई संरचना का पालन किया जाएगा, जो संबंधित आयु वर्ग 3-8, 8-11, 11-14 और 14-18 वर्ष के अधीन होगा।[16]

संदर्भ

1. "एजुकेट | ओरिजिन एंड मीनिंग ऑफ एजुकेट बाय ऑनलाइन एटिमोलॉजी डिक्शनरी" । www.etymonline.com । 3 अगस्त 2021 को लिया गया ।
2. अस्मान 2002 , पृ. 127.
3. लिंच 1972 , पृ. 47.
4. ए बी ब्लैनी 2004 , पृ. ?.
5. "क्यों कन्फ्यूशियस आज भी प्रासंगिक है? हिज साउंड बाइट्स होल्ड अप" . राष्ट्रीय भौगोलिक . 25 मार्च 2015 । 6 अक्टूबर 2018 को लिया गया ।
6. कॉलिन 2014 , पृ. 65.
7. ए बी सी लियोन-पोर्टिला 2012 , पीपी। 134-35।
8. रीगन 2005 , पृ. 108.
9. हन्नम, जेन्स (18 मई 2011)। "विज्ञान ईसाई धर्म और मध्य युग दोनों के लिए बहुत अधिक बकाया है: सोपबॉक्स साइंस" । blogs.nature.com । 6 अक्टूबर 2018 को लिया गया ।

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 4.988

| Volume 4, Issue 4, April 2021 |

10. "रॉबर्ट ग्रोसेटेस्ट" . कैथोलिक विश्वकोश । न्यूएडवेंट। 1 जून 1910 । 16 जुलाई 2011 को लिया गया ।
11. "सेंट अल्बर्टस मैग्नस" . कैथोलिक विश्वकोश । Newadvent.org। 1 मार्च 1907 । 16 जुलाई 2011 को लिया गया ।
12. सन्ज़ एंड बर्गन 2006 , पृ. 136.
13. थिएम, इरविन (1969)। "19वीं शताब्दी की शुरुआत में प्रशिया की प्रारंभिक शिक्षा पर पेस्टलोज़ी का प्रभाव" (पीडीएफ) । etheses.dur.ac.uk । 10 सितंबर 2021 को लिया गया ।
14. रॉबिन्सन, सर केन (फरवरी 2006), क्या स्कूल रचनात्मकता को मारते हैं? , www.ted.com , 3 अगस्त 2021 को पुनःप्राप्त
15. "एन्हांसिंग एजुकेशन" । एन्हांस्ड . wgbh.org । 2002 से संग्रहीत मूल 19 अक्तूबर 2003 को।
16. "परिप्रेक्ष्य सक्षमता केंद्र, लाइफलिंग लर्निंग प्रोग्राम" . www.competencecentre.eu । मूल से 15 अक्टूबर 2014 को संग्रहीत किया गया ।